राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1218

3 दिसम्बर, 2014 को उत्तर के लिए

इस्पात उद्योग को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धात्मक बनाने हेतु कदम उठाया जाना

1218. श्री हुसैन दलवई:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) इस्पात उत्पादन के मामले में विश्व में भारत का स्थान क्या है;

(ख) क्या भारत प्रचालनों की तकनीकी-आर्थिक दक्षता के संदर्भ में अन्य प्रमुख इस्पात उत्पादक देशों से पिछड़ रहा है;

(ग) यदि हां, तो इस कमी के लिए जिम्मेदार कारकों सहित तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या इसने भारतीय इस्पात उद्योग को दुनिया के इस्पात बाजार में कम प्रतिस्पर्धी बना दिया है; और

(ङ) भारतीय इस्पात उद्योग को विश्व-स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने हेतु कौन-कौन से कदम उठाये जाने हैं?

उत्तर

इस्पात और खान राज्य मंत्री **श्री विष्णु देव साय**

(क): वर्ल्ड स्टील एसोसिएशन(डब्ल्यूएसए) द्वारा जारी रैंकिंग के अनुसार, भारत वर्ष 2013 में विश्व का चौथा सबसे बड़ा क्रूड इस्पात उत्पादक देश था।

(ख) और (ग): जी हां। वैश्विक मांनदंडों की तुलना में भारतीय इस्पात उद्योग के प्रौद्योगिकी-आर्थिक पैरामीटर निम्नवत हैं:

मद	वैश्विक इस्पात उद्योग	भारतीय लोहा और इस्पात उद्योग
ब्लास्ट फर्नेस उत्पादकता (टन/दिन/एम3 कार्य मात्रा)	2.5-3.5	1.5-2.5/2.8
कोक दर (किलोग्राम/ टन हॉट मेटल)	300-350	400-520
ब्लास्ट फर्नेस पुलवराइज्ड कोल इंडक्शन (बीएफ पीसीआई)(किलोग्राम/टन हॉट मेटल)	150-200	50-200
ऊर्जा खपत(जीसीएएल/ टन क्रूड स्टील)	4.5-5.5	6-6.5
कार्बन-डाई-आक्साइड उत्सर्जन(टन/ टन क्रूड स्टील)	1.8-2.0	2.0-3.0

1990 के दशक अथवा उसके बाद स्थापित ग्रीन फील्ड इस्पात संयंत्रों ने मुख्यत: अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाया है। कुछ ही समय के भीतर इनमें से अधिकतर संयंत्रों ने प्रक्रिया के तहत स्वच्छ और हरित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाते हुए अपनी क्षमताओं का कई गुना विस्तार भी कर लिया है। तथापि कुछ पुराने संयंत्रों में आधुनिकीकरण, नवीकरण और विस्तार की गति धीमी रही है। यह कच्ची सामग्री की गुणवत्ता में कतिपय अड़चनों के साथ-साथ सरसरी तौर पर देश में इन इस्पात संयंत्रों के कमजोर प्रौद्योगिकी-आर्थिक निष्पादन को स्पष्ट करता है।

(घ): परिवहन लागत, कच्ची सामग्री की लागत, बाजार पहुंच जैसे अनेक अन्य पैरामीटर हैं, जो प्रतिस्पर्धा को प्रभावित करते हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले वित्तीय वर्ष में भारत इस्पात का एक शुद्ध रूप से सीमान्त निर्यातक था।

(ड़): इस्पात एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है और प्रौद्योगिकी-आर्थिक निष्पादन और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार का दायित्व निजी इस्पात कंपनियों का है। तथापि, सरकार लोहा और इस्पात उद्योग के लिए निवेश, उत्पादन, अनुसंधान एवं विकास और मूल्यवर्धन में बढ़ोत्तरी के लिए कई कदम उठा रही है। सरकार इस्पात कंपनियों द्वारा लोहा और इस्पात क्षेत्र में किए जा रहे अनुसंधान एवं विकास कार्य, अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान कर रही है ताकि उद्योग द्वारा सामना किए जा रहे प्रौद्योगिकीय चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

उपरोक्त के अलावा, इस्पात कंपनियों ने बडे पैमाने पर क्षमता विस्तार और प्रौद्योगिकी के उन्नयन के लिए भी कार्य शुरू किए हैं। इस्पात कंपनियां कंपनी विशिष्ट आर एंड डी कार्यक्रमों पर भी कार्रवाई कर रही हैं, जिसमें अन्य के साथ साथ निम्न भी शामिल हैं:

- कच्ची सामग्रियों का उन्नयन,
- प्रक्रिया/प्रौद्योगिकी, उत्पाद और उत्पादकता में सुधार करना,
- नए उत्पाद विकसित करना और गुणवत्ता में सुधार, और
- ऊर्जा खपत और पर्यावरण प्रबंधन में सुधार करना।

***